स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा, खण्ड–तीन

नाटक का सिद्धांत पक्ष

– डॉ. मुन्ना साह

भारतीय संस्कृत शास्त्रों में नाटकों के तीन तत्व प्रस्तुत किए गए हैं – **1. वस्तु, 2. नेता, 3. रस**

अरस्तु ने नाटक के त्रासदी के छः तत्व माने हैं – 1. कथानक, 2. चरित्र–चित्रण, 3. पद–रचना, 4. विचार–तत्व, 5. दृश्य–विधान, 6. गीत। इनमें से कथानक, चरित्र–चित्रण, विचार–तत्व अनुकरण के विषय हैं दृश्य–विधान माध्यम है और पद रचना तथा गीत अनुकरण की विधि।

वस्तु – आधिकारिक और प्रासंगिक वस्तु के भेद हैं। आधिकारिक कथावस्तु का संबंध अधिकारी से है। फल का स्वामित्व अधिकार है और उस फल का स्वामित्व प्राप्त करने वाला पात्र 'अधिकारी' कहलाता है। प्रासंगिक कथावस्तु पताका और प्रहरी रूप में अभिव्यक्त होता है। जो नाटक की कथा काफी दूर तक चलती रहती है वह, पताका कहलाती है और जो कुछ ही दूर तक चलकर समाप्त हो जाती है, प्रहरी कही जाती है।

नेता – नेता से तात्पर्य चरित्र–चित्रण से है। स्वभावव भेद के आधर पर चार प्रकार के नायक माने जाते हैं – धीरललित, धीरप्रशांत, धीरोदात्त और धीरोद्धत। धीरललित ललित कलाओं का प्रेमी रसिक व्यक्ति होता है। धीरप्रशांत शांत प्रकृति का। धीरोदात्त उच्च कुल का गंभीर, वीर उदार होता है। धीरोद्धत अहंकारी, दंभी, ईर्ष्यालु और उद्धत होता है। नायिकाएँ तीन प्रकार की मानी गई हैं – स्वकीया, परकीया और गणीका।

रस – भारतीय नाट्यशास्त्रों में रस को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसे काव्य की आत्मा तक कहा गया। सामाजिकों को रस से उद्रिक्त करना नाटकों का प्रमुख लक्ष्य रहा है। भारतीय नाटकों में वस्तु और नेता साधन हैं, किंतु रस साध्य है।

———————————————— ••• ————————————————